Sub:- C-4 Langyge across the curriculum द्वितीय भाषा, औपचारिक और अनौपचारिक भाषा

Jitesh Srivastva

27.4.2020

Second Language, Formal and Informal Language

(1) औपचारिक भाषा :- प्रतिदिन के जीवन में औपचारिक रूप से प्रयोग में लाई जानेवाली भाषा या बोली जिसे व्यक्ति ने शिक्षित समुदाय (विद्यालयों में) से विशेष प्रयास करके ग्रहण किया हो वह भाषा औपचारिक भाषा है। Ex - विद्यालय

(2) अनौपचारिक भाषा :- जो भाषा वे अपने माँ-बाप, भाई-बहन, मित्र-साथी, आदि के माध्यम से प्राप्त करके अपने उच्चारण को किसी सीमा तक शुद्ध करने में समर्थ होते हैं उसे अनौपचारिक भाषा कहते हैं। Ex - छोटे बालक या अनपढ़

(1) औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था :- औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था विद्यालय में की जाती है। विद्यालयों में भिन्न-भिन्न परिवारों, भिन्न-भिन्न जातियों और भिन्न-भिन्न धर्मों के बच्चे आते हैं। यह भी हो सकता है कि उनकी भाषा में भिन्नता हो तथा उनकी संस्कृति भी भिन्न-भिन्न हो।

शिक्षकों का सर्वप्रथम कर्तव्य यह है कि वे विद्यालयों में समाज की सर्वमान्य भाषा एवं सर्वमान्य आचरण की व्यक्तियों को सीखेंगे और विद्यालयी समाज में समायोजन करेंगे। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालयों का पर्यावरण पूर्णरूपेण लोकतन्त्रीय हो, शिक्षक को सभी बच्चों के व्यक्तित्व का आदर करना चाहिए और जाति, लिंग, धर्म आर्थिक स्तर सामाजिक स्तर आदि किसी भी आधार पर

Scanned with CamScanner

भेदभाव किए बिना उनके साथ समान व्यवहार करना चाहिए। विद्यालय में प्रत्येक कार्य में बच्चों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है अतः उक्त स्थिति में ही बच्चों को लोकतंत्रीय समाज में समायोजन के योग्य बना सकते हैं।

ऐसे विद्यालय के बच्चे एक ओर अपने समाज की स्वीकृत विधियों को सीखकर अपने समाज में समायोजन करेंगे और दूसरी ओर समाज को आवश्यकतानुसार उचित स्वरूप प्रदान करेंगे। किसी बच्चे के समाजीकरण में सबसे पहली भूमिका परिवारों की होती है। शिक्षकों को परिवार के सदस्यों को बच्चों के उचित समाजीकरण के लिए तैयार करना चाहिए। उन्हें अभिभावकों से भेंट कर उन्हें विद्यालय के सर्वमान्य नियमों से परिचित करा देना चाहिए, उन्हें जाति, धर्म और व्यवसाय आदि की संकीर्णता से निकलकर वृहद् समाज के सदस्य के रूप में सीखने के लिए विवश करना चाहिए।

औपचारिक भाषा का महत्व :-

1- विचार-विनिमय की कुशलता का विकास :-

परिवार में मातृभाषा के माध्यम से विचारों के आदान-प्रदान की अर्जित प्रारम्भिक योग्यता का विद्यालयों में औपचारिक शिक्षा द्वारा विकास होता जाता है। विद्यालय में बालकों को मानक उच्चारण, व्याकरण, वाक्य-संरचना, वाक्य लेखन तथा प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति का अभ्यास कराया जाता है। जिससे बालक की विचार-विनिमय की कुशलता का विकास किया जाता है।

2. जीविकोपार्जन-क्षमता का विकास :-

समाज में जीवित रहने तथा अपने अस्तित्व को समुचित और सामाजिक मान्यता प्राप्त करने के लिए जीविकोपार्जन की आवश्यकता होती है। मातृभाषा के माध्यम से ही जीविकोपार्जन की क्षमता प्राप्त होती है और बालक की भावी जीवन की ठोस नींव (जीविकोपार्जन-क्षमता का विकासाधार) मातृभाषा की शिक्षा के माध्यम से रखी जा सकती है।

Scanned with CamScanner

3. सांस्कृतिक चेतना का विकास :- मातृभाषा की औपचारिक शिक्षा शिक्षार्थी में उसके समाज की सांस्कृतिक चेतना (जीवन मूल्यों तथा विचारधाराओं) का विकास करती है। और व्यक्ति को सुसंस्कृत नागरिक बनाने का उत्तरदायित्व मातृभाषा की औपचारिक शिक्षा पर ही है।

अनौपचारिक भाषा :- छोटे बालक या अनपढ़ लोग व्यवस्थित भाषा शिक्षण तो नहीं पाते किन्तु वे अनौपचारिक भाषा शिक्षण अवश्य पाते हैं। Ex - माँ-बाप, गाँव-वतन, मित्र-साथी आदि। इस प्रकार बालकों तथा अनपढ़ लोगों की मातृभाषा या भाषा की शिक्षा मुख्यतः भाषा के दो कौशलों - श्रवण तथा भाषण तक ही सीमित रह जाती है। उस के दो कौशल - लेखन तथा वाचन बिल्कुल शून्य रह जाते हैं। साथ ही उन का ग्रहण तथा अभिव्यक्ति क्षेत्र भी बहुत कुछ सीमित होता है।

वे सूक्ष्म तथा गूढ़ भावों-विचारों की भाषा के ग्रहण तथा अभिव्यक्ति पक्ष में आगे पर असमर्थ पाए जाते हैं। साथ ही वह वक्ता या लेखक के सूक्ष्म तथा गूढ़ भावों-विचारों को ग्रहण करने में अपने को असमर्थ महसूस करते हैं।

निष्कर्ष :- उपर्युक्त कथनों के आधार पर कहा जा सकता है कि अनपढ़ लोगों के सामने जीवन-यापन का क्षेत्र पर्याप्त संकुचित रहता है तथा उनकी सामाजिक परिधि भी काफी छोटी रह जाती है।

भाषा की व्यवस्थित शिक्षा ही ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयों को ग्रहण तथा अभिव्यक्त करने की आधारशीला है।

Scanned with CamScanner